RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 सितम्बर 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, सितम्बर 2021

चकमक

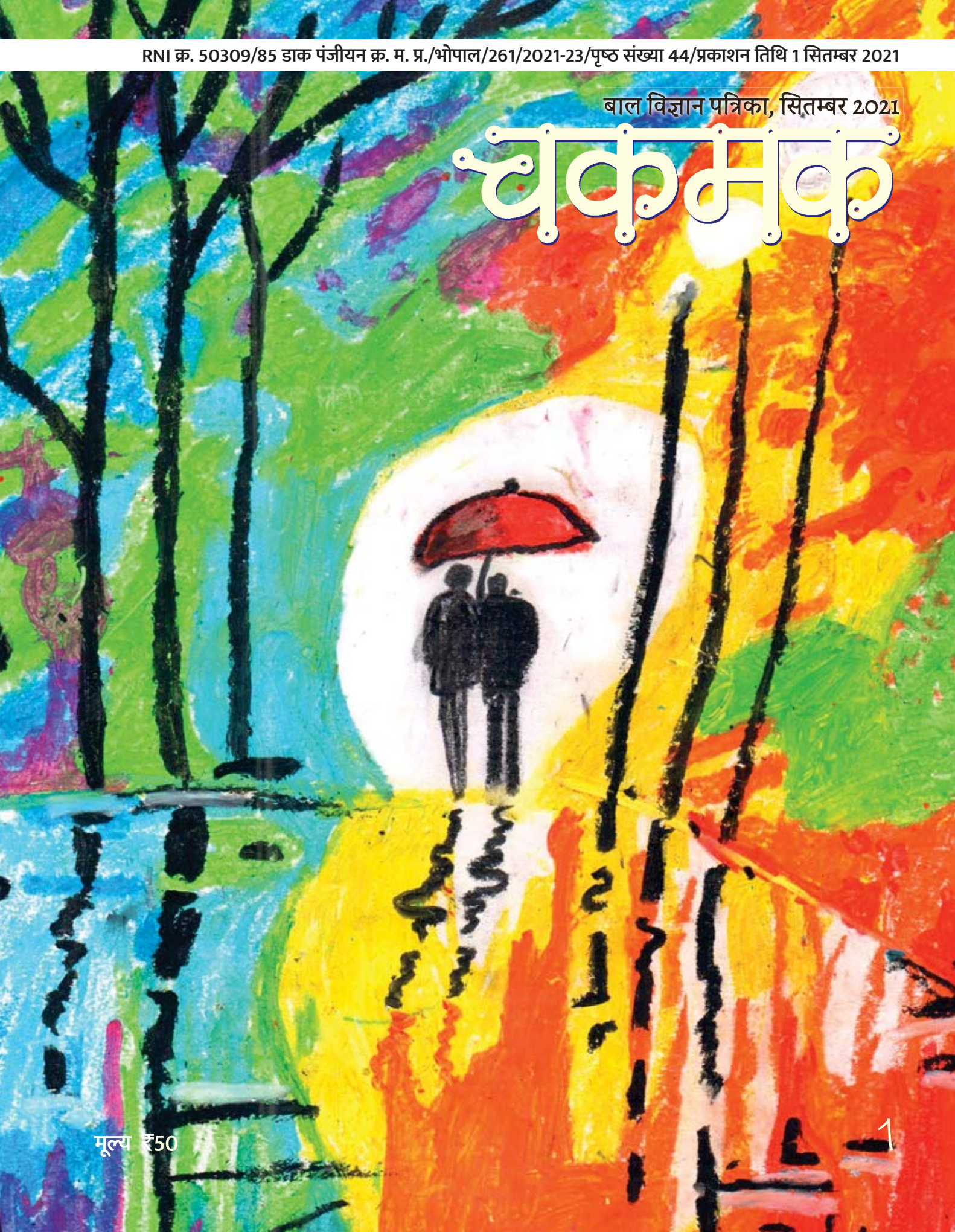

मूल्य ₹50

मेरा पन्ना

हमेशा की तरह इस बार भी नवम्बर अंक 'विशेषांक' होगा। इसमें तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे पन्ने होंगे।

तो मेरा पन्ना कॉलम के लिए अपनी लिखी/बनाई ऐसी रचनाएँ (कविता, कहानी, लेख, चित्र, पेंटिग आदि) भेजो जो तुमने अपने खुद के अवलोकन या कल्पना से रची हो। इसके अलावा नवम्बर अंक के लिए तुम इन विषयों पर भी लिख सकते हो:

चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा

शाना, आठ वर्ष, चंडीगढ़, पंजाब
चकमक, अगस्त 1999

चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा
जंग तो कारगिल में चल रही है ना
अगर चंडीगढ़ में गिरे तो भी
सैनिक अड्डों पर ही गिरेगा
वो तो चंडी मन्दिर और सेक्टर में हैं
मैं जिन्दा रहूँगी
वैसे चंडीगढ़ पाकिस्तान में होता
तो क्या हो जाता
लोगों का सुखी रहना ज़रूरी है
मैं मरना नहीं चाहती
दुनिया के उन इलाकों में
जहाँ जंग नहीं है
बच्चे बड़े होंगे
मेरे यहाँ बम गिरेगा
तो मैं मर जाऊँगी
मैं मरना नहीं चाहती

चित्र: प्रीति, चकमक, अक्टूबर 2008

मेरा पन्ना

- हम सभी कभी ना कभी किसी काम/चीज़ से बचने के लिए बहाने बनाते हैं। तुमने भी कभी ना कभी ऐसा किया होगा। अपने ऐसे ही किसी बहाने के बारे में लिखो जो काम कर गया हो। चाहो तो चित्र या कॉमिक के ज़रिए भी इसे बता सकते हो।

- ऐसे बहुत-से लोग हैं जो रोज़मर्रा के जीवन में हमारी अलग-अलग तरह से मदद करते हैं, जैसे कि दूधवाले, सब्ज़ीवाली/सब्ज़ीवाले, अखबार वाले, किसी चीज़ की मरम्मत करने वाले, पलम्बर, मैकेनिक, घर में काम करने वाले आदि। इनमें से किसी के साथ भी एक छोटा-सा इंटरव्यू करो और हमें भेज दो। सम्भव हो तो उनकी फोटो भी खींचकर भेज सकते हो।

- जब तुम छोटे थे तो तुम्हारे बड़े लोग तुम्हें किस-किस तरह से डराते थे। लिखकर या चित्र बनाकर भेजो।

- इनके अलावा तुम मज़ेदार चुटकुले और माथापच्ची कॉलम के लिए पहेलियाँ व गणित के सवाल वगैरह भी भेज सकते हो।

तुम्हारे जवाब हम तक 30 सितम्बर तक पहुँच जाएँ तो बहुत बढ़िया होगा। जवाब तुम chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो अथवा 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व पता ज़रूर लिखना।

तुम्हारी रचनाओं का इन्तज़ार रहेगा। चकमक

चित्र: अवन्ती साखरे, पहली, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

अंक 420 • सितम्बर 2021

चकमक

इस बार

बतखोरू – वीरेन्द्र दुबे – 4

क्यों-क्यों – 6

मेरा पन्ना – 8

नन्हा राजकुमार – पन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी – 10

तुम भी बनाओ – कनक शशि – 13

पेड़ क्या करता है – राजेश जोशी – 14

तालाबन्दी में बचपन – अस्पताल और कोरोना का डर – आरुषि – 16

माथापच्ची – 20

कल शाम जेल में हुई सबसे अनोखी घटना – देवांगना कलिता – 21

टर्र-टर्र – नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन – 24

जिन्न ऐसे होते हैं? – मोहम्मद अरशद खान – 26

गणित है मज़ेदार – चन्दा, शतरंज...भाग – 2 – आलोका कन्हरे – 30

मेरा पन्ना – 32

तुम भी जानो – 39

चित्रपहेली – 40

भूलभुलैया – 43

डिस्को डाँसर मेंढक – रोहन चक्रवर्ती – 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव
भाविनी पन्त

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण चित्र: निथुनिका, चौथी, द येलो ट्रेन स्कूल, कोयम्बटूर, तमिलनाडु

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

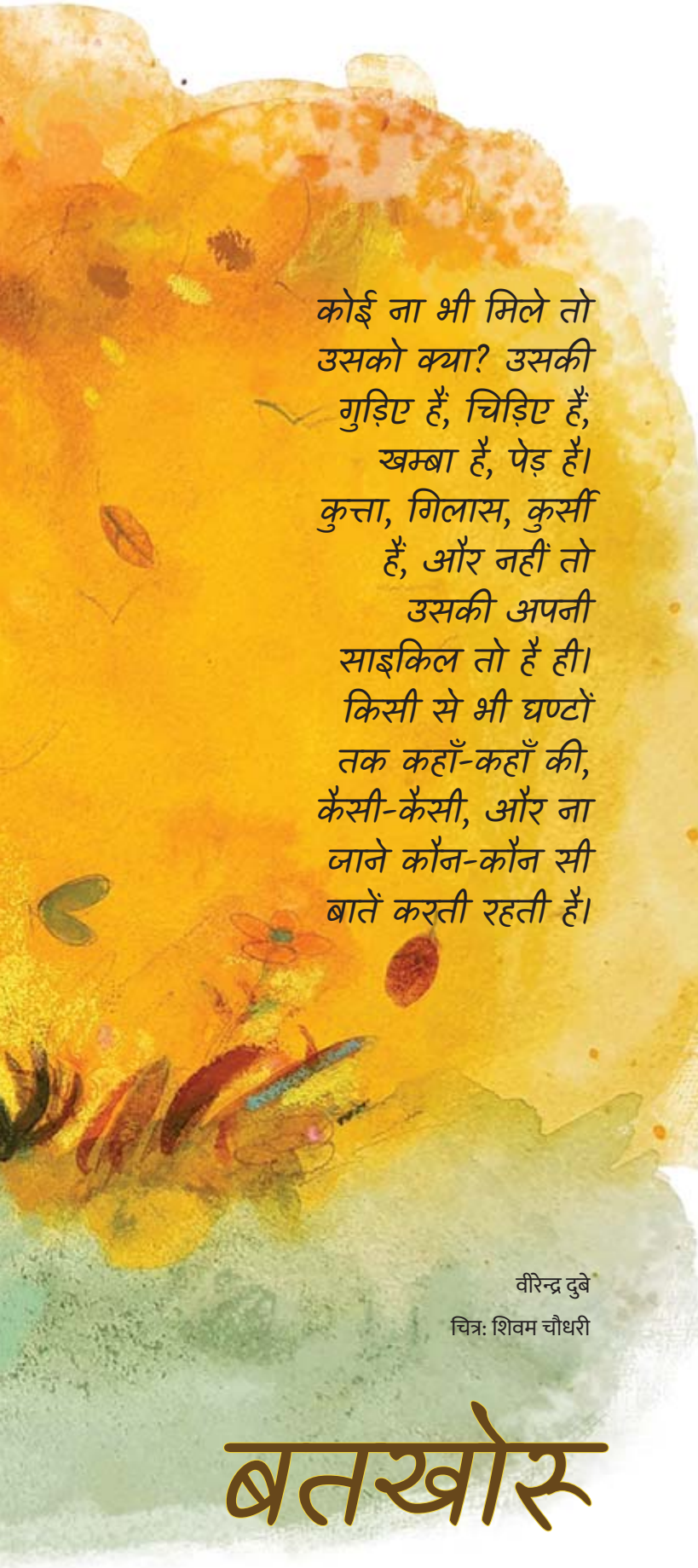

कोई ना भी मिले तो उसको क्या? उसकी गुड़िए हैं, चिड़िए हैं, खम्बा है, पेड़ है। कुत्ता, गिलास, कुर्सी हैं, और नहीं तो उसकी अपनी साइकिल तो है ही। किसी से भी घण्टों तक कहाँ-कहाँ की, कैसी-कैसी, और ना जाने कौन-कौन सी बातें करती रहती है।

बतखोरू

वीरेन्द्र दुबे

चित्र: शिवम चौधरी

स्कूल में तो उसका नाम बबीता है। पर दादी की देखा-देखी सब उसे ‘बतखोरू’ कहते। पहले तो वह इस पर चिढ़ जाती थी। पर अब उसे अच्छा ही लगता है जब उसे कोई बतखोरू कहकर बुलाता है। अब तो उसे बबीता अटपटा लगता।

वह दिन भर बक-बक करती रहती है। कोई सुने या ना सुने, उसकी बला से। इससे उसका क्या? अपने में मगन, खुद से ही बतियाती रहती है। है भी इतनी चुलबुली कि कोई ना कोई बोलने-बतियाने लगता। बातें ही इतनी मज़ेदार करती।

कोई ना भी मिले तो उसको क्या? उसकी गुड़िए हैं, चिड़िए हैं, खम्बा है, पेड़ है। कुत्ता, गिलास, कुर्सी हैं, और नहीं तो उसकी अपनी साइकिल तो है ही। किसी से भी घण्टों तक कहाँ-कहाँ की, कैसी-कैसी, और ना जाने कौन-कौन सी बातें करती रहती है।

सवाल भी खुद ही करती और उनकी तरफ से लम्बे-लम्बे जवाब भी खुद ही देती चलती। कभी उनकी तरफ से हामी भरती, कभी मनाही करती। वह भी हाथ हिला-हिलाकर, कभी नाक-भौं चढ़ाकर तो कभी सिकोड़कर। कभी ज़ोर-से ठहाका मारकर खिलखिलाने लगती। कभी कहती, “कितनी बात करते हो, सिर खाते रहते हो। चुप भी रहा करो, मुँह नहीं थकता क्या।” फिर ज़ोर-से हँसती।

घर के लोग तो उसकी इन हरकतों के आदी हो गए थे। पर आने-जाने वाले बहुत बार ठिठक जाते। उनको यह अजीब-सा लगता। कभी-कभार कोई गौर-से सुनता कि क्या बोल रही है, तो सोच में पड़ जाता कि कहीं इसको कोई दिमागी बीमारी तो नहीं है? पर दादी के कड़क मिज़ाज के चलते किसी की एक ना चलती। उलटे डपट देतीं वें। बकबक करती हूँ तो क्या मैं पागल हूँ?

क्यों क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

पिछले अंक में तुमने ग्राफिटी पर एक लेख (तोड़-फोड़ की कला) पढ़ा होगा। अगर तुम्हें कहीं ग्राफिटी बनाने का मौका मिलता तो तुम क्या लिखते या उकेरते, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

मेरा जो भी उस टाइम पर मन करेगा, वही बनाऊँगी।

श्रेया गुप्ता, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं ग्राफिटी वहाँ बनाऊँगी जहाँ लोग ज़्यादा आएँगे और मैं एक छोटी-सी चिड़िया की बच्ची मेरे पास बनाऊँगी क्योंकि मैं दिखाना चाहूँगी कि हमें जानवरों से भी प्यार करना चाहिए। हमें जानवरों को मारना नहीं चाहिए। अगर हम जानवरों को नहीं मारेंगे तो वे हम पर हमला नहीं करेंगे।

आरुषि कलूंडा, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी विद्यालय, मातली, उत्तराखण्ड

मैं पानी बचाने की ग्राफिटी बनाऊँगी, क्योंकि अब हमारे पास बहुत कम पानी है। रोड पर आते-जाते लोग उसको देखेंगे तो अपने आप में सुधार करने का सोचेंगे।

एंजेलीना सोजी, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं डूडल बनाना पसन्द करूँगी क्योंकि मुझे डूडल बनाने में मज़ा आता है और यह मेरी भावनाएँ दिखाने में मदद करता है।

अविघ्ना रिचारिया, सातवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं अपने बाथरूम में ग्राफिटी बनाना चाहूँगा क्योंकि मेरा बाथरूम एकदम पीला है। और मुझे पीला कलर देखकर चक्कर आते हैं।

राजवीर चौहान, आठवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

अगली बार के लिए सवाल है—

चोट लगने पर कभी गर्म सिकाई करते हैं तो कभी बर्फ लगाते हैं। ऐसा क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

भाग – 3

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी
अनुवाद : लालबहादुर वर्मा

पिछले अंक में तुमने पढ़ा...
लेखक को विश्वास है कि नन्हा राजकुमार B612 ग्रह से है जिसकी खोज कुछ ही समय पहले हुई थी। छह साल हो गए उसके दोस्त को गए लेकिन लेखक को उसकी बातें याद हैं... धीरे-धारे वह अपने दोस्त के बारे में जानने लगता है। यह भी कि नन्हे राजकुमार के ग्रह के पर कुछ पौधे तो अच्छे माने जाते हैं और कुछ पौधे बुरे, जैसे कि बाओबाब। अपने दोस्त की बातों के समझने के बाद और उसके आग्रह पर लेखक ने उसके ग्रह पर होने वाले बाओबाब का एक चित्र बनाया जो काफी अच्छा बना।
अब आगे...

ओह! नन्हे राजकुमार! मैंने तेरा जीवन, उसकी उदासी धीरे-धीरे समझ ली थी। बहुत दिनों तक मेरे पास मन बहलाने का एकमात्र साधन था सूर्यास्त का सौन्दर्य। इसका पता मुझे तुझसे मुलाकात के चौथे दिन चला जब तूने मुझसे कहा, "मुझे सूर्यास्त बहुत अच्छा लगता है। आओ, चलें देखें।"

"लेकिन उसके लिए तो अभी इन्तज़ार करना होगा।"

"इन्तज़ार? इन्तज़ार किस बात का?"

"कि सूर्यास्त हो।"

तुझे बड़ा आश्चर्य था। तू अपने में हँसता हुआ बोला था।

"अरे! मैं सोच रहा था कि मैं अपने घर हूँ।"

"वास्तव में जब अमेरिका में दोपहर हो तो फ्रांस में सूर्यास्त हो रहा होता है। अगर कोई अमेरिका से तुरन्त फ्रांस पहुँच जाए तो दोपहर के फौरन बाद शाम देख सकता है। दुर्भाग्यवश दोनों के बीच की दूरी काफी है। लेकिन तेरी छोटी-सी धरती पर तुझे बस अपनी कुर्सी थोड़ी इधर-उधर खिसकाने की ज़रूरत होती होगी और तू जितनी बार चाहे सूरज का डूबना देख सकता होगा।"

"एक दिन मैंने तैतालीस बार सूर्यास्त देखा था।"

और तू फिर बोला, "जानते हो जब कोई उदास हो तो सूर्यास्त बड़ा अच्छा लगता है।"

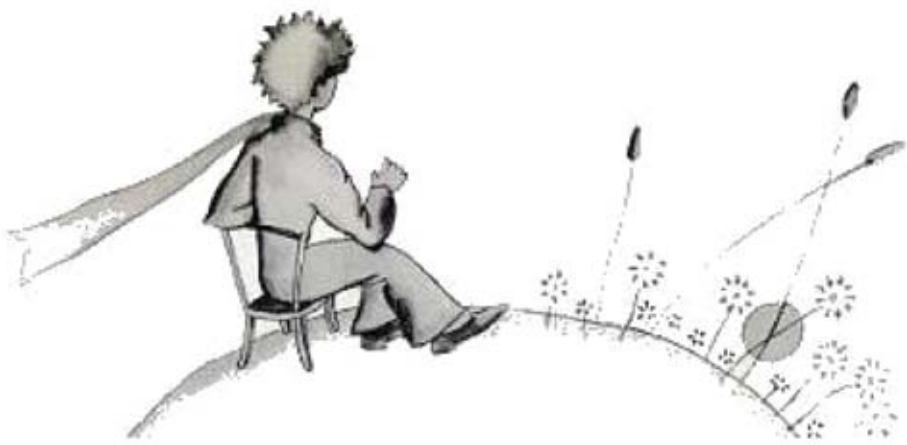

अस्पताल और कोरोना का डर

आरुषि
चित्र: हबीब अली

शुरू के दिनों में सपना को अस्पताल आने-जाने में डर लगता था। अब उसे इसकी आदत हो चली है। उसे अक्सर वो दिन याद आते हैं जब उसने अस्पताल में काम करना शुरू किया था। सपना को रूम नम्बर सोलह में जाना था। आगे बढ़ते हुए वह कमरा ढूँढ़ रही थी। उसकी नज़र अस्पताल की गहमागहमी पर भी थी। चारों तरफ रोते-चिल्लाते मरीज़ और उनके साथ परिवार के एक या दो रिश्तेदार नज़र आ रहे थे। उनके चेहरे पर उदासी साफ दिख रही थी। उनका ध्यान कमरे को ढूँढ़ने में था।

आखिरकार वह सोलह नम्बर के रूम में पहुँच ही गई। हाथों में झाड़ू-पोंछा पकड़कर सपना गेट खोल कमरे के अन्दर गई। कमरा तो उसके घर से भी बड़ा था। उस कमरे में पूरे पन्द्रह-सोलह बेड लगे थे और हरेक बेड पर एक मरीज़ लेटा था। बेड के बगल में ऑक्सीजन सिलेंडर भी रखा हुआ था। मरीज़ के चेहरे पर ऑक्सीजन का मास्क लगा था। मरीज़ों में कोई चुपचाप लेटा था तो किसी की नज़र ऑक्सीजन डिस्प्ले से हट ही नहीं रही थी। सपना मन ही मन सोचने लगी कि ऐसा माहौल तो जब से कोरोना शुरू हुआ है तब से सिर्फ टी.वी., रेडियो और अखबारों में सुनते और देखते आ रहे थे। अब कोरोना मरीज़ों को अपने सामने कुछ मीटर की दूरी पर बेड पर लेटे देख उसे डर-सा लगने लगा। उसने पूरी किट पहन रखी थी, तब भी। लोग तो कह रहे हैं कि कोरोना हवा से भी फैल रहा है। सच में कोरोना से बचे रहना कितना मुश्किल है।

उसे ऐसा लग रहा था कि पूरा अस्पताल ही कोरोना मरीज़ों से भरा पड़ा है। उसने सोचा यहाँ पर तो आसपास की सभी जगहों पर कोरोनावायरस ज़रूर ही होगा। और जो मरीज़ ठीक सामने लेटे हैं, वे तो कोरोना से लिपटे हुए होंगे ही। उनके पास वह गई और छोटी-सी भूल हुई नहीं कि कोरोना उससे चिपक जाएगा। मरीज़ों के बगल में रखे टेबल पर खाने के कुछ डिब्बे, पानी की बोतल और कुछ ज़रूरी सामान पहले से ही मौजूद था। हर मरीज़ के बगल में बड़ी-बड़ी मशीनों के साथ एक छोटा टेबल फैन और व्हीलचेयर भी थी। कुछ बेड पर औरतें थीं, तो कुछ पर मर्द।

धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए सपना और अन्दर गई। उसकी भी नज़र मरीज़ के ऊपर दीवार पर लगे स्क्रीन डिस्प्ले पर ही गई। सपना यही देख रही थी कि किसकी साँसें चल रही है, किसकी नहीं। फिर वह अपना काम करने लगी। पहली बार किट पहनकर सफाई करते हुए उसकी साँसें फूलने लगी थीं। तब वह किट को हल्का-सा ऊपर-नीचे कर साँस लेती। उसे इसका डर लगा रहता कि कहीं साँस लेते वक्त वायरस की शिकार ना हो जाए। पूरे कमरे में झाड़ू-पोंछा कर वह कुछ देर के लिए नीचे हॉल में चली गई। तब भी उसने किट पहनी हुई थी।

मरीज़ों में कोई चुपचाप लेटा था तो किसी की नज़र ऑक्सीजन डिस्प्ले से हट ही नहीं रही थी। सपना मन ही मन सोचने लगी कि ऐसा माहौल तो जब से कोरोना शुरू हुआ है तब से सिर्फ टी.वी., रेडियो और अखबारों में सुनते और देखते आ रहे थे। अब कोरोना मरीज़ों को अपने सामने कुछ मीटर की दूरी पर बेड पर लेटे देख उसे डर-सा लगने लगा।

तालाबन्दी में बचपन

कल शाम जेल में हुई सबसे अनोखी घटना

देवांगना कलिता
अनुवाद: कविता तिवारी

कल शाम जेल में सबसे अनोखी घटना हुई। अपनी पिछली चिट्ठी में मैंने लिखा था कि कैसे मैं और बच्चे मिलकर इन्द्रधनुष और जुगनुओं के बारे में सोचते रहते हैं।

दो साल से कम उम्र के तीन बच्चे (जो हमारी भाषा नहीं बोलते हैं), थोड़ा-थोड़ा बोलने वाला दो साल का एक बच्चा और बहुत बोलने वाली चार साल की लड़कियों को मैंने ये समझाने की कोशिश की कि इन्द्रधनुष कैसा दिखता है। उसमें कौन-कौन से रंग होते हैं। हमारे पास सिर्फ लाल रंग के क्रेयान का एक टूटा हुआ टुकड़ा था। इसलिए हमने बाकी के रंग पुराने अखबारों से ढूँढ़े और उनको फाड़कर अपना इन्द्रधनुषी कोलाज बनाया। बच्चे बहुत ही खुश और उत्सुक थे। लेकिन थोड़ी उलझन में भी थे, "पर आसमान में इतने सारे रंग कैसे हो सकते हैं?" सबसे बड़ी बच्ची पूछती रही।

और फिर अचानक, ना जाने कहाँ से कल शाम ऐसा हुआ। यह शाम का वो वक्त था जब सूरज डूबने से पहले झिलमिलाते कण हमारी नज़रों के सामने नाचने लगते हैं। याद है एक शाम हमने उन्हें खोजा था। आसमान असाधारण रूप से नीला और साफ था। शाम की रोशनी मद्धिम और उदासी भरी थी। सूरज बादलों के पीछे से झाँक रहा था। और बहुत हल्की-सी बूँदाबाँदी हो रही थी। एक पल के लिए उम्मीद जगी, लेकिन उम्मीद करने से डर लगता है।

सबसे बड़ी बच्ची चिल्लाई, "आंटी, देखो इन्द्रधनुष।" हाँ, वो हमें आंटी बुलाते हैं। मेरे खयाल से अब हम आंटी हो भी गए हैं। मैं उनमें से अधिकांश बच्चों की

चित्र: जेल के फूल

माँओं से कम से कम पाँच साल बड़ी हूँ। हर कोई मुझे कहता रहता है कि मेरे बाल बहुत सफेद हो गए हैं। और मुझे उन्हें कलर करना चाहिए। लेकिन इससे पहले मुझे उन्हें कंघी करना चाहिए। महिला जेल में बालों को संवारना, करीने से चोटी बनाना और उन्हें कलर करना काफी सामूहिक गतिविधि है।

तो, हाँ आकाश में सचमुच का इन्द्रधनुष था। हमारे वार्ड के सामने खुद को प्रदर्शित करता इन्द्रधनुष का एक शानदार टुकड़ा था। बच्चे उसे देखकर उत्साह से भर गए थे। उनमें से हर कोई चाहता था कि उसे ऊपर उठाया जाए ताकि वो इन्द्रधनुष को अच्छे-से देख सके। चारों ओर उत्साह फैला हुआ था। महिलाएँ बाहर आने और इस नज़ारे को देखने के लिए एक-दूसरे को ज़ोर-ज़ोर से बुलाने लगीं।

जिन्न ऐसे होते हैं?

मोहम्मद अरशद खान
चित्र: हबीब अली

जब सुहेल की अम्मी उसे डाँट रही थीं, तभी मैंने तय कर लिया था कि उन खण्डहरों की तरफ ज़रूर जाऊँगा। मैंने सुहेल को अपना इरादा बताया तो अम्मी की डाँट के बावजूद वह राज़ी हो गया।

हमारे कस्बे में एक पुराना खण्डहर था। उसके ज़्यादातर कमरों की छतें ढह चुकी थीं। बस कुछेक दीवारें और खम्भे खड़े थे, जिन पर घास उग आई थी। लोग कहते थे कि उस सुनसान

"जिन्न अक्सर सुनसान जगहों में रहते हैं। कुछ तो खुले पानी या समुन्दर में भी रहते हैं। कुछ खतरनाक किस्म के जिन्न कब्रिस्तान में भी पाए जाते हैं, जो इन्सानों का गोश्त खाते हैं। अगर कोई ज़िन्दा आदमी रात-बिरात इनके बीच फँस जाए तो उसका खून पी जाते हैं। और तो और कुछ जिन्न तो इन्सानी शक्ल में रहते हैं। कोई भूल से भी उनके हाथ पड़ जाए तो उसे कैद करके भेड़ बना देते हैं।"

भाग-2

चन्दा, शतरंज और चावल के दाने

आलोका कन्हरे

पिछले अंक में तुमने 'चन्दा, शतरंज और चावल के दाने' कहानी पढ़ी होगी। यदि नहीं पढ़ पाए हो तो मैं संक्षेप में बता देती हूँ।

चन्दा ने राजा से चावल के दानों की माँग की थी। उसने एक आसान-सी माँग रखी थी।

वह चाहती थी कि पहले चौकोर के लिए चावल के 2 दाने दिए जाएँ, दूसरे चौकोर के लिए 4 दाने, तीसरे चौकोर के लिए 8 दाने और इसी तरह आगे भी। इसका मतलब हुआ कि अगले चौकोर के लिए चावल के दाने पिछले चौकोर के दानों से दुगुने होंगे।

आओ, दानों की संख्या को फिर से देखते हैं।

चौकोर संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
चावल के दानों की संख्या	2	4	8	16	32	64	128	256	512	1024	2048

बीस नम्बर के चौकोर तक चन्दा के पास चावल के दस लाख से ज़्यादा दाने होंगे। क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि यह कितने किलोग्राम चावल होगा?

12	13	14	15	16	17	18	19	20
4096	8192	16384	32768	65536	131072	262144	524288	1048576

तुम पचास ग्राम चावल में दानों की संख्या गिन सकते हो। और इस संख्या को 20 से गुणा करके 1 किलोग्राम चावल में दानों की संख्या पता कर सकते हो। (सोचो कि हमने 20 से ही गुणा क्यों किया?)

मान लो कि चावल के प्रत्येक किलोग्राम में औसतन पचास हज़ार दाने होते हैं। इस हिसाब से चावल के दस लाख दाने लगभग 20 किलोग्राम के बराबर होंगे। यानी कि बीसवें चौकोर के लिए 20 किलोग्राम चावल देना होगा। और फिर इक्कीसवें चौकोर के लिए 40 किलोग्राम। बाइसवें चौकोर के लिए 80 किलोग्राम। तो तेईसवें चौकोर तक चन्दा के पास डेढ़ क्विंटल से भी ज़्यादा चावल होगा। क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि चौसठवें चौकोर के लिए कितना ज़्यादा चावल होगा?

क्या तुम चन्दा की संख्याओं (2, 4, 8, 16,...) और संख्याओं 4, 12, 36, 108 में कोई समानता देख सकते हो?

गणित है मज़ेदार!

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि आपको ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

बारिश-बारिश

अबिरामी,
तीसरी, द येलो ट्रेन स्कूल, कोयम्बटूर,
तमिलनाडु

बारिश ने नाक में कर दिया है दम
लेकिन कुछ नहीं कर सकते हम
स्कूल के अन्दर भी पानी
स्कूल के बाहर भी पानी
इतनी बारिश किसने कर दी
कि डर गए सारे प्राणी

चित्र: निथुनिका,
चौथी, द येलो ट्रेन
स्कूल, कोयम्बटूर,
तमिलनाडु

मेरा पन्ना

गॉडजिला

सनव श्रीवास्तव,

दूसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

कभी-कभी मैं सोचता हूँ काश कि मैं एक गॉडजिला होता। बहुत भयानक, बहुत बड़ा। तब किसी से ना लगता मुझको डर।

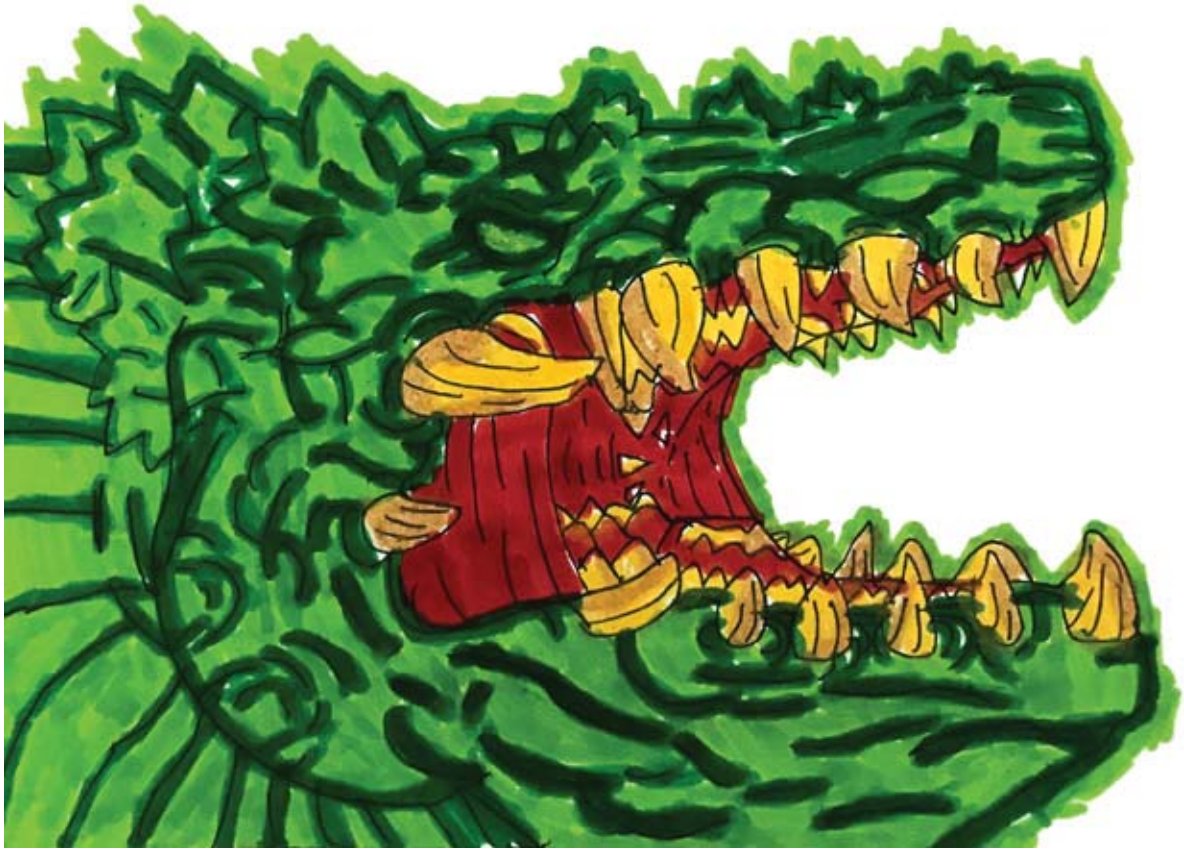

चित्र: सनव श्रीवास्तव, दूसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मोहन सब्ज़ी वाला

आफरीन,

तीसरी, शासकीय प्राथमिक शाला, धर्मश्री, सागर, मध्य प्रदेश

एक किसान था। उसका नाम मोहन था। उसका एक बड़ा खेत था। वह उसमें सब्ज़ियाँ उगाता था। वो अपने खेत का बहुत ध्यान रखता था। एक दिन उसके खेत में बहुत सारी सब्ज़ियाँ होने लगीं। वो यह देखकर बहुत खुश हुआ। और रोज़ सब्ज़ियाँ बेचने जाता था। उसकी सब्ज़ियाँ बिकती भी थीं और वो उसकी खूब कमाई हो जाती थी। एक दिन उसकी सब्ज़ियाँ नहीं बिकीं तो वह दुखी होकर अपने घर लौट आया। और सोच में पड़ गया कि आज तो मेरी कमाई नहीं हुई। घर का सामान कैसे लाऊँ।

कनक शशि

पूरी चकमक पढ़ने के लिए सब्सक्राईब करें

...मैंने एकलव्य की इस पत्रिका के लिए चकमक नाम सुझाया। ...चकमक की चिंगारी तो क्षण भर में ही बुझ जाती है। पर इस चिंगारी को तमाम लोगों ने एक लम्बे अर्से तक ज़िन्दा रखा है। चकमक पास हो तो तुम दुबारा चिंगारी पैदा कर सकते हो। अँधेरा चाहे कितना ही गहरा हो फिर भी चकमक से तुम्हें मंज़िल तक पहुँचने में मदद ज़रूर मिलेगी।

पद्मश्री अरविन्द गुप्ता, वैज्ञानिक व टॉयमेकर

चकमक सदस्यता (सब्सक्रिप्शन) खुद के लिए लें, बच्चों के लिए लें, जन्मदिन के उपहार में दें, स्कूलों, पुस्तकालयों, बच्चों के साथ काम कर रही संस्थाओं को दें...

दोस्तो,

पिछले कुछ समय से कुछ पाठकों से *चकमक* की प्रतियाँ ना मिलने या देर से मिलने की शिकायतें आ रही थीं। मालूम होता है कि साधारण डाक से सभी पाठकों को *चकमक* की प्रति समय से नहीं मिल पा रही है। इसलिए जुलाई अंक से नए सदस्यों को *चकमक* **रजिस्टर्ड डाक** द्वारा भेजी जाएगी। इसके चलते *चकमक* की सदस्यता शुल्क की नई दरें इस प्रकार होंगी:

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

यदि पुराने पाठक भी (जिन्हें *चकमक* नहीं मिल रही हो या समय पर उन तक नहीं पहुँच रही हो) रजिस्टर्ड डाक से *चकमक* मँगवाना चाहें तो वे chakmak@eklvaya.in पर ईमेल करें अथवा 9074767948 पर सम्पर्क करें।

नोट: रजिस्टर्ड पोस्ट की कीमतों में बदलाव होने पर सदस्यता दरों में भी बदलाव सम्भव है।